# महिला सुरक्षा व सम्मान का ढोल बजाने वालों ने ही ढोल फ़ाड़ा

**फरीदाबाद ( म.मो. )** हाथी के दांत दिखाने के और खाने के और कहावत फ़रीदाबाद के पुलिस कमिश्नर ए एस. चावला पर सटीक बैठती है। महिला सुरक्षा व सम्मान का ढोल बजाने वाले कमिश्नर खुद ही महिला सुरक्षा सम्मान का ढोल फ़ाड़ते नज़र आए।

दिनांक 20 मार्च एन.आई.टी. के 5 नम्बर के 20 नम्बर मकान की हिस्सेदारी को लेकर परिवार की एक महिला प्रीति ने अपने भाई, भतीजों व भाड़े के गुंडों को बुलाकर जबरन अपनी देवरानी के हिस्से पर कब्ज़ा करना चाहा और जब पीड़ित महिला पुष्पा ने इस घटना की जानकारी एस एच ओ को फ़ोन पर दी तो एस एच ओ ने पुलिस बल मौके पर भेजने का आश्वासन दिया। करीब 20 मिनट तक भी पुलिस बल नहीं पहुंची तो उसने दोबारा एस एच ओ को फ़ोन किया जो उन्होंने नहीं उठाया।

अपने घर पर कब्ज़ा और तोड़-फ़ोड़ होते देख पीड़ित पुष्पा ने पुलिस कमिश्नर को फ़ोन किया और पूरी जानकारी दे ही रही थी कि कमिश्नर ने अपने को मिटिंग में कह कर पल्ला झाड़ लिया। पुष्पा ने थाना एन आई टी के एस एच ओ को दोबारा फ़ोन कर पुलिस बल नहीं पहुंचने और कमिश्नर को फ़ोन करने की बात कही तो कहीं जाकर एन आई टी पुलिस मौके पर पहुंची। जब तक पुलिस आई तब तक पीड़ित पुष्पा का घर पूरी तरह से टूट चुका था। एन आई टी पुलिस जबरन मकान पर कब्ज़ा करने आए गुण्डों, प्रीति और उसके भाई के साथ-साथ पीड़ित पुष्पा को भी थाने में ले गई।

थाने में एस आई सतपाल सिंह ने पीड़ित पुष्पा से एक शिकायत लिखवा कर लेली। इस पर कार्यवाही करने के बज़ाय सतपाल सिंह ने प्रीति व उसके भाई से रुपए की सैटिंग करली तथा पीड़ित पुष्पा को ही झाड़ दिया। सतपाल सिंह ने कार्यवाही के नाम पर उल्टे पीड़िता पर ही फ़ैसले का दबाव बनाते हुए कहा कि तुम्हारा जो भी नुकसान और तोड़-फ़ोड़ हुई है उसे प्रीति व उसके भाई ठीक करवा देंगे। दोनों को वापिस भेज दिया।

दिनांक 21 मार्च यानी अगले ही दिन प्रीति उसके भाई व करीब आधा दर्जन गुंडों ने फ़िर पीड़ित पुष्पा के मकान में बने टॉयलेट बाथरूम व रसोई की छत तोड़ दी और पुष्पा व उसके दोनों बच्चों को धमकाया। यह सब होता देख पीड़ित पुष्पा के पड़ोसी ने कमिश्नर चावला को दिन में दो/ढाई बज़े फ़ोन कर जानकारी दी। कमिश्नर साहब, उस भले आदमी से ही सवाल जवाब करने लगे कि उसे उनका नम्बर किसने दिया? पहले उस व्यक्ति का पता दो। काफ़ी जद्दो-जहद के बाद कमिश्नर ने डी सी पी एन आई टी से बात करने को कहा। जिन्होंने फ़ोन उठाया ही नहीं। फ़िर थाने में किया तब कहीं जाकर पुलिस पहुंची। फ़िर ड्रामेबाज़ी

**पुलिस कमिश्नर का यह रवैया स्वतः सिद्ध करता है कि उनके थाने-चौकियों में जनता के साथ जो लूट-मार हो रही है उसके बारे में वे कुछ भी सुनना नहीं चाहते क्योंकि जो कुछ भी वहां हो रहा है वह सब उनकी जानकारी, मर्ज़ी व संरक्षण में ही हो रहा है; ऐसे में जाहिर है लूट का हिस्सा भी उन तक अवश्य पहुंचता होगा। इसी वजह से थाने-चौकियों में पूरे बेखौफ़ तरीके से जनता को लूटा-पीटा जा रहा है।**

कर दोनों पक्षों को थाने में ले गई। थाने में पीड़ित पुष्पा चिल्लाती रही, रोती रही, बराबर कहती रही कि इस जायदाद पर कोर्ट केस चल रहा है। लेकिन एस आई सतपाल सिंह ने पुष्पा से कहा कि घर में बैठ कर फैसला करो। दोबारा आधे घंटे बाद ही प्रीती उसके भाई व उसके गुण्डों को छोड़ दिया गया।

पीड़ित पुष्पा व उसके बच्चों को शौच आदि के लिये घर से बाहर जाना पड़ रहा है। पड़ोसियों के घर ही नहाना धोना पड़ रहा है। इस घटना ने कमिश्नर के महिलाओं सुरक्षा व सम्मान के ढोल पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। यह ठीक है कि पुलिस कमिश्नर या डी सी पी (पुलिस उपायुक्त) आदि हर समय जनता के फ़ोन नहीं सुन सकते, न ही हर वक्त मिल सकते क्योंकि उन्हें और भी बहुत से काम होते हैं। लेकिन सवाल सबसे बड़ा यह पैदा होता है कि आम आदमी को इन्हें फ़ोन करने या मिलने की जरूरत ही क्यों पड़ती है?

यदि थाने-चौकियों में ठीक से काम करके जनता को राहत दे दी जाय तो कोई क्यों फ़ोन करेगा और क्यों मिलने आयेगा? किसको इतनी फुर्सत है जो अपने काम छोड़कर इनके दरवाज़े पर बैठा रहे।

इसी मामले में यदि थाने में पीड़िता की सुनवाई हो जाती, उसके घर में घुसकर तोड़-फ़ोड़ करने वाले भाड़े के गुंडों को, यदि रिश्वत खाकर छोड़ने की बज़ाय पुलिस उचित कार्यवाही कर देती तो कोई किसी को क्यों फ़ोन करता?

पुलिस कमिश्नर का यह रवैया स्वत: सिद्ध करता है कि उनके थाने-चौकियों में जनता के साथ जो लूट-मार हो रही है उसके बारे में वे कुछ भी सुनना नहीं चाहते क्योंकि जो कुछ भी वहां हो रहा है वह सब उनकी जानकारी, मर्ज़ी व संरक्षण में ही हो रहा है; ऐसे में जाहिर है लूट का हिस्सा भी उन तक अवश्य पहुंचता होगा। इसी वजह से थाने-चौकियों में पूरे बेखौफ़ तरीके से जनता को लूटा-पीटा जा रहा है।

# कैसीनो का बढ़ता कारोबार रोज़ाना एक करोड़ का व्यापार

## पुलिस के सहयोग से करोबारियों के हौंसले बुलंद

**फ़रीदाबाद ( म.मो. )** 'कैसीनो' यानी ऑनलाइन जुए का कारोबार शहर में लगातार बढता ही जा रहा है। भीतर की जानकारी रखने वाले विशवस्त सूत्र बताते हैं कि इस धंधे में प्रतिदिन एक करोड़ से अधिक का लेन-देन होता है। लैपटॉप पर खेलने वाले खिलाड़ी तो दिन-रात जब मर्जी खेलें लेकिन आम जनता के लिये खुले केन्द्रों पर सुबह 6 से शाम के 6 बजे तक ही काम चलता है। कैसीनो पर जुआ खिलाने वाला एजेंट पहले बैंक में पैसा जमा कराकर अपने कम्प्यूटर में लोड कराता है फ़िर खिलाड़ी (ग्राहकों) से नकद वसूल करता रहता है।

26 फ़रवरी को इस काले कारोवार का शिकार हुए हिमांशु मामले को लेकर शहरवासियों ने प्रदर्शन करके हार्डवेयर चौक को जाम भी किया था। पुलिस द्वारा कार्यवाही का आश्वासन दिया गया था। लेकिन कोई कार्यवाही न होने पर हिमांशु के परिजन 18 मार्च को पुलिस कमिश्नर चावला से मिले और कैसीनो संचालकों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की मांग की। चावला ने इन्हें टर्काते हुए ए सी पी पूनम दलाल के पास भेज दिया।

हिमांशु के परिजनों ने बताया कि ए सी पी दलाल ने उनके कहने पर चारों कैसीनो संचालकों-सुखदयाल, धर्मपाल, पवन तथा मनोज भाटिया को बुलाया। परिजन तो बाहर बैठे रहे जबकि वे चारों ए सी पी के दफ़्तर के भीतर करीब एक घंटे बात-चीत करके फ़ारिग होकर चले गये।

पुलिस के इस व्यवहार तथा कार्यशैली को देखते हुए पीड़ित पक्ष का यह विश्वास और भी सुदृढ हो गया कि पुलिस इनसे मिली हुई है। पीड़ित पक्ष का कहना है कि इन काला-कारोबारियों ने अब बाकायदा अपनी यूनियन बना कर मोटा चंदा एकत्र कर पुलिस चौकी से लेकर कमिश्नर ऑफ़िस तक पहुंचा दिया है जिसके चलते वे छुट्टे घूम रहे हैं। अखबारों में खबरें छपने व पुलिस तक शिकायतें पहुंचने से इस काले-कारोबार पर कतई कोई असर नहीं पड़ रहा है, हां इससे पुलिस के भाव जरूर बढ़ जाते हैं।

## समाजवाद के प्रति प्रतिबद्धता जाहिर करते हुए किया साथी संजय मौर्या ने नामांकन पत्र दाखिल

**फ़रीदाबाद 15 मार्च 2014,**

**मज़दूर** वर्ग के संघर्षों को आगे बढ़ाने पूंजीवादी व्यवस्था की जगह समाजवाद के विकल्प को समाज में स्थापित करने के उद्देश्य के साथ निर्दलीय प्रत्याशी संजय मौर्या ने आज अपना नामांकन दाखिल किया। साथी संजय मौर्या पेशे से मज़दूर हैं। साथी संजय मौर्या को इंकलाबी मज़दूर केन्द्र, वीमन वर्कर्स यूनियन प्रगतिशील लोक मंच, शील पैकेजिंग वर्कर्स यूनियन सहित कई ट्रेड यूनियनों, मज़दूर संगठनों व सामाजिक संगठनों ने अपना समर्थन दिया है। आज दोपहर दो बजे दर्जनो मज़दूरों ट्रेड यूनियन प्रतिनिधियों व महिलाओं के साथ जोशो-खरोश के साथ नारेबाज़ी करते हुए संजय मौर्या नामांकन के लिये लघु सचिवालय पहुंचे। इस अवसर पर साथी संजय मौर्या ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि आज किसी भी पार्टी के घोषणापत्र में मज़दूरों मेहनतकशों का एजेन्डा गायब है। ठेकेदारी प्रथा के साथ 5-7 हज़ार रुपये में मज़दूर 12-12 घंटा फैक्ट्रियों में खट रहे हैं। कहीं भी श्रम कानून लागू नहीं हो रहे हैं। फैक्ट्रियों में मज़दूर खतरनाक परिस्थितियों में काम करते हुए अपनी जान खो रहे हैं, अपंग हो रहे हैं, किसान आत्महत्या को मजबूर हो रहे हैं लेकिन कोई भी पार्टी इनके दर्द व वेदना को नहीं ध्यान दे रही है। उन्होंने कहा कि मौजूदा व्यवस्था की सभी समस्याओं का समाधान केवल समाजवाद में संभव है। उन्होंने कार्यकर्ताओं व मज़दूरों का आह्वान किया कि लोकसभा चुनाव के अवसर पर वे पूंजीवाद के स्थान पर समाजवाद के विकल्प को सभी मज़दूर मेहनतकश जनता तक पहुंचाने के लिए पुरजोर कोशिश करे। इस अवसर पर मज़दूर कार्यकर्ताओं ने 'पूंजीवाद मुर्दाबाद' समाजवाद के लिये संघर्ष जिंदाबाद, 'बेरोजगारी-महंगाई-शोषण-उत्पीड़न व भ्रष्टाचार का एक ईलाज, खत्म करो पूंजी का राज', 'पूंजीवाद नहीं समाजवाद चाहिए, मज़दूरों को राज चाहिए' आदि नारे लगाए।

# कानून की धज्जियां उड़ाने में थानेदार हिम्मत सिंह की हिम्मत

**बल्लबगढ ( म.मो. ) दि**नांक 28 मार्च को सायं करीब चार बजे स्थानीय ज़िला कोर्ट के वकील शिव कुमार जोशी कोर्ट से घर लौट रहे थे कि पंचायत भवन (जिसमें प्रशासनिक कार्यालय चलते हैं) के सामने एक मोटर साइकिल ने टक्कर मारकर उनकी कार का काफ़ी नुकसान कर दिया। मोटर साइकिल को एक 10-12 साल का लड़का चला रहा था और उस जैसे ही दो अन्य उसके पीछे बैठे थे।

वकील साहब ने तुरन्त 100 नंम्बर पर फ़ोन किया। इससे पहले कि पुलिस पहुंचती उन बच्चों के परिजन मौके पर पहुंच गये। परिजनों ने बच्चों को खासा धमकाया तथा चलाने वाले बच्चे की चोखी धुनाई भी कर दी। मज़े की बात यह है कि यह सारा नज़ारा वहीं खड़ी 'महिला हेल्प लाइन' की पुलिस जिप्सी में बैठे पुलिसकर्मी बड़े इतमिनान से देख रहें हैं, उनमें से किसी ने भी जिप्सी में से उतर कर किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं समझी।

थोड़ी देर में चावला कॉलोनी पुलिस चौकी से (ई)एस.आई. हिम्मत सिंह भी पधार गये। गलत दिशा से आकर मोटर साइकिल सवार नाबालिग बच्चों या उनके परिजनों के विरुद्ध कोई भी कानूनी कार्यवाही करने के बजाय हिम्मत सिंह ने उल्टे वकील साहब को दबाने के लिये आरोपियों व उनके परिजनों को वकील साहब के ख़िलाफ़ ही दरखास्त देने के लिये उकसाना शुरू कर दिया।

इसका परिणाम अन्तत: यह हुआ कि बच्चे व उनके परिजन मोटर साइकिल लेकर हंसते कूदते निकल गये और वकील साहब कानून की दुहाई देकर अपना सिर धुनते रह गये। यह सब तो तब हुआ जब वकिल साहब अपनी कोर्ट ड्रेस में थे।

जाहिर है इससे प्रोत्साहित होकर न केवल वे बच्चे बल्कि अन्य भी जब-तब किसी भी वाहन को उठाकर चल देंगे और किसी भी दुर्घटना को अंजाम देंगे जिसमें वे खुद भी हताहत हो सकते हैं।

हिम्मत सिंह ने भी कानून की धज्जियां कोई मुफ़्त में नहीं उड़ाई होंगी। वकील साहब के जाते ही परिजनों से वसूली कर अपनी दिहाड़ी बना ली होगी। जबकि कानून का पालन करके मुकदमा दर्ज करने पर उसे काग़ज काले करने पड़ते, कुछ हाथ पैर हिलाने पड़ते और वकील साहब ने चवन्नी देनी नहीं थी। जाहिर है हिम्मत सिंह ऐसा घाटे का सौदा क्यों करने लगा। अब बेचारा हिम्मत सिंह भी क्या करे, जब उच्चाधिकारियों के पेट लाखों-करोड़ों में भी नहीं भरते तो उसने अगर हज़ार पांच सौ की दिहाड़ी बना ली तो क्या हो गया।

# गतांक की चीर-फ़ाड़

**मज़दूर मोर्चा** के 16-31 मार्च 2014 के अंक में अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय व स्थानीय राजनीतिक, प्रशासकीय व सामाजिक मुद्दों पर लेख पढने को मिले। 'यूक्रेन में तख्तापलट-गैस और तेल के लिए अमेरिका का एक और खूनी दांव' लेख में दूसरे देशों की गैस व तेल को हड़पने और उन देशों में अपने आधिपत्य को स्थापित करने की अमेरिकी साजिशों का सटीक विश्लेषण किया गया है। अमेरिकी साजिशों का ताजा शिकार यूक्रेन हुआ है। सोवियत संघ के विघटन के बाद जब यूक्रेन आज़ाद हुआ तब क्रीमिया उसका हिस्सा बन रहा हालांकि क्रीमिया में रूसी लोग़ों का भारी बहुमत था। क्रीमिया में करवाए गए जनमत संग्रह के बाद यूक्रेन के क्रीमिया का रूस में विलय हो चुका है और अब इस सच्चाई को बदला नहीं जा सकता। यूक्रेन के दो तिहाई गैस भंडार क्रीमिया में स्थित है जिसकी सप्लाई शुरू से ही रूस के हाथ में है। इसलिए अमेरिका व यूरोपीय संघ के देश तिलमिला रहे हैं। यह गुट अब रूस पर हर तरह के अन्तर्राट्रीय प्रतिबंध लगाने के लिए तथा रूस को अलग-थलग करने के लिए कटिबद्ध हैं। भारत के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने रूस के राष्ट्रपति पुतिन से बातचीत में रूसी कार्यवाही का समर्थन किया है और यह स्वीकार किया है कि यूक्रेन में रूस के वैध हित हैं। परंतु भारत कब तक अपने इस दृष्टिकोण पर कायम रहता है यह देखने वाली बात है क्योंकि भारत को यह आशंका है कि बाद में भारत के राज्य जम्मू-कश्मीर पर भी जनमत संग्रह कराने की बात उठ सकती है। दूसरी तरफ़ भाजपा तो सदैव अमेरिका की पक्षधर रही है। इसलिए अमेरिका ने 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के सत्ता में आने की संभावना के मद्देनज़र मोदी को खुश करने के लिए तथा मोदी सरकार के साथ मिलकर काम करने के लिए भारत स्थित अपने राजदूत नैनसी पॉवेल को वापिस बुलाने तथा उसके स्थान पर एक अन्य राजनीतिक व्यक्ति को राजदूत नियुक्त करने की संभावना जताई है। एक अन्य लेख 'मोदी तेरी हवा कहा है?' द्वारा पाठकों को घटनाक्रम की सही जानकारी दी गई है कि वास्तव में कहीं भी मोदी की हवा नहीं है, यह तो भाजपा तथा मोदी द्वारा मीडिया के ज़रिए अपनाई गई प्रचारतन्त्र की नीति का परिणाम है। मोदी के गुजरात के विकास मॉडल की आलोचना करने पर भाजपा के वरिष्ठ नेता व प्रवक्ता रवि शंकर प्रसाद आलोचकों पर तीखा हमला करते हुए कहते हैं कि यह गुजरात का चुनाव नहीं है बल्कि 2014 का लोकसभा चुनाव है जिसके लिए राष्ट्रीय मुद्दे हैं, इसलिए गुजरात की क्यों बात करते हो। बल्कि मुद्दा है कि यूपीए 2 के दौरान विकास के क्या कार्य हुए हैं? गौरतलब है कि भाजपा तथा मोदी स्वयं तो गुजरात के विकास मॉडल की दुहाई देते नहीं थकते परंतु जब गुजरात मॉडल का पर्दाफाश किया जाता है तो उनको तिलमिलाहट होती है। लेख 'कुसी चाहिए, कांग्रेसी बनो' द्वारा देश की राजनीतिक परिस्थितियों का स्पष्टीकरण करते हुए उचित ही लिखा है कि सत्ता प्राप्ति के लिए कांग्रेसांतरण चाहिए तथा कांग्रेस को सत्ता से हटाने के लिए बनते ध्रुवीकरण से स्पष्ट होता है कि राजनीति में आसानी से चोला तो बदला जा सकता है, परंतु डीएनए नहीं। गौरतलब है कि इस लोकसभा चुनाव में भी भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता जैसे मुद्दे गौण हो गए हैं। ये केवल भाषण व चुनाव सभाओं के मुद्दे रह गए हैं। साम्प्रदायिकता फैलाने वाले तथा भ्रष्टाचारी व्यक्ति को प्रत्येक राजनीतिक दल अपना उम्मीदवार बनाने को तैयार बैठा है। इन राजनीतिक दलों के लिए एक ही पैमाना है कि फलां व्यक्ति चुनाव जीत सकता है या नहीं। इसलिए चुनाव के लिए उम्मीदवारी को लेकर सभी राजनीतिक दलों में विद्रोह के स्वर मुखर हो रहे हैं। इस मामले में आप भी अपवाद नहीं है। लेख 'कैसीनो का खेल' द्वारा शहर में पुलिस की साठगांठ से चल रहे जुआघर (कैसीनो) का पर्दाफ़ाश किया गया है। पुलिस की मिलीभगत तो इसी से स्पष्ट है कि पीड़ित हिमांशु की खुदकुशी के बाद उपजे रोष के मद्देनज़र पुलिस ने अपनी जांच के बाद कहा कि उस इलाके में कोई कैसीनो नहीं मिला।

**-डॉ जुगल किशोर गुप्ता**